Dr. Nutisri Dubey
(Assistant Professor, Dept. of Philosophy, H.D. Jain College, Ara)

U.G IV Sem. MJC-05 : Western Philosophy

Aristotle : 'Form' and 'Matter'
('आकार' एवं 'द्रव्य')

अरस्तू के दर्शन में 'आकार' एवं 'द्रव्य' को स्वरूपत: एक दूसरे से पृथक नहीं माना गया है किन्तु वैचारिक दृष्टि से दोनों का अलग-अलग विवेचन किया जा सकता है। वस्तु जगत में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसमें केवल जड़ द्रव्य हो, लेशमात्र भी आकार न हो। इसी प्रकार ऐसी कोई वस्तु दृश्य नहीं है जिसमें केवल आकार हो लेशमात्र भी जड़द्रव्य न हो। वस्तुत: प्रत्येक वस्तु द्रव्य और आकार दोनों का संघात है। कोई वस्तु एक दृष्टि से द्रव्य है तो दूसरी दृष्टि से आकार है।

अरस्तू के अनुसार द्रव्य वास्तव में तो कुछ नहीं है, परन्तु इसमें प्रत्येक वस्तु बनने की क्षमता है (संभावना है)। उसने आकार को वास्तविकता (Actuality) और जड़ द्रव्य को संभाव्यता (Potentiality) कहा है। प्रत्येक वस्तु का विकास संभाव्य से वास्तविक स्वरूप की ओर होता है। प्रत्येक वस्तु अपने से

उच्च स्तरीय वस्तु के लिए द्रव्य है और अपने से निम्न स्तर की वस्तु के लिए आकार है। कालिक दृष्टि से द्रव्य आकार का पूर्ववर्ती है क्योंकि द्रव्य संभावना या साध्यता के रूप में आकार से पहले ही विद्यमान है। इसके विपरीत तार्किक दृष्टि से आकार द्रव्य का पूर्ववर्ती है, क्योंकि द्रव्य आकार के रूप में रूपान्तरित होकर ही वास्तविकता को प्राप्त करता है।

अरस्तू के अनुसार सृष्टि विकासशील है। विकास की प्रक्रिया में सबसे निम्न स्तर पर निरपेक्ष द्रव्य (Absolute Matter) है। यह आकार से नितान्त शून्य है। इसमें आकार लेशमात्र भी नहीं है। इसके विपरीत विकास के सर्वोच्च शिखर पर निरपेक्ष आकार (Absolute Form) अथवा विशुद्ध आकार (Pure Form) है। निरपेक्ष आकार में द्रव्य का नितान्त अभाव है। निरपेक्ष द्रव्य और निरपेक्ष आकार कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं है। वास्तव में वे केवल तार्किक सत्ता के रूप में मान्य हो सकते हैं। अरस्तू इस निरपेक्ष आकार को ही 'ईश्वर' कहता है। उसका ईश्वर 'विशुद्ध आकार' (Pure Form) अथवा 'आकारों का आकार' (Form of Forms) है।

अरस्तू के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि निरपेक्ष द्रव्य और निरपेक्ष आकार के बीच स्थित है। प्राकृतिक विकास में आकार एक प्रेरक शक्ति है। इसके विपरीत द्रव्य एक अवरोधक या गति को बाधित करने वाला तत्व है।

अरस्तू ने द्रव्य के आकार में परिवर्तन को भी गति कहा है। वह गति (Motion) का प्रयोग अत्यन्त व्यापक और बहुआयामी अर्थ में करता है। इसके अन्तर्गत वस्तुओं के उद्भव, विकास, ह्रास और विनाश को भी सम्मिलित किया गया है। इसका प्रयोग गुणात्मक परिवर्तन के अर्थ में भी किया गया है। जैसे - किसी वस्तु का विभिन्न रंगों में परिवर्तन भी गति के अन्तर्गत आता है। वह परिमाणात्मक परिवर्तन (जैसे वृद्धि, ह्रास आदि) एवं संचरण (Locomotion) शक्ति को भी गति का ही रूप मानता है। इस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान तक

गमन से लेकर प्रत्येक प्रकार का परिवर्तन गति में सम्मिलित है। अरस्तू के अनुसार गति संभाव्य वस्तु की क्षमता है। यह साध्यता (Potentiality) की सिद्धि है।

अरस्तू का विकासवाद किसी देश-काल में घटित होने वाली प्रक्रिया नहीं है। यह तार्किक प्रक्रिया है। उच्चतर आकार वास्तविक (Actual) हैं और निम्नतर आकार वास्तविक बनने के लिए प्रयत्नशील हैं। विकास की प्रत्येक अवस्था में एक ही पूर्ण आकार (ईश्वर) स्वयं को अभिव्यक्त कर रहा है। उच्चतर अवस्थाओं के आकार में निम्नतर अवस्थाओं के आकार नष्ट नहीं होते हैं। निम्न अवस्थाएं उच्च अवस्थाओं में अन्तर्निहित होती हैं। किन्तु निम्नतर आकारों की अपेक्षा उच्चतर आकार अधिक विकसित होते हैं।

अरस्तू के द्वारा आकार और द्रव्य (उपादान) को आदि कारण मान लेने से किसी भी वस्तु के अस्तित्व की व्याख्या नहीं हो पाती है क्योंकि आकार और द्रव्य के संप्रत्यय स्पष्ट एवं सुबोध नहीं हैं। इनके द्वारा किसी घटना अथवा वस्तु की व्याख्या नहीं की जा सकती। अरस्तू तत्वमीमांसीय द्वैतवाद का प्रतिपादन करता है। अतः उसके दर्शन के विरुद्ध वे सभी आपत्तियाँ लागू हो जाती हैं जो सांख्य रूप से द्वैतवादी दर्शन पर उठाई जाती है। यदि आकार और द्रव्य परस्पर विरोधी हैं तो उनके संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति असंभव हो जायगी। आकार और द्रव्य एक दूसरे से स्वतन्त्र और भिन्न होने पर भी सृष्टि की उत्पत्ति और विकास के लिए किस प्रकार संयुक्त होते हैं? इस प्रश्न का कोई समुचित उत्तर अरस्तू नहीं दे पाते हैं। अरस्तू केवल यह कहते हैं कि आकार और द्रव्य दृश्य जगत् में परस्पर अवियोज्य रूप से पाये जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कोई तर्कसंगत उत्तर अरस्तू नहीं दे पाते हैं।